HIN3B18a_cours-11-2013-04-18-Rahi-Masum-Raza

राही मासूम रज़ा (१ सितंबर, १९२५ - १५ मार्च १९९२) का जन्म गाजीपुर जिले के गंगौली गांव में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गंगा किनारे गाजीपुर शहर के एक मुहल्ले में हुई थी। बचपन में पैर में पोलियो हो जाने के कारण उनकी पढ़ाई कुछ सालों के लिए छूट गयी। इंटरमीडियट करने के बाद वह अलीगढ़ आ गये और यहीं से उन्होंने एम.ए. करने के बाद उर्दू में `तिलिस्म-ए-होशरुबा' पर पीएच.डी. की। पीएच.डी. करने के बाद राही अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के उर्दू विभाग में प्राध्यापक हो गये और अलीगढ़ के ही एक मुहल्ले बदरबाग में रहने लगे।

साम्यवादी दृष्टिकोण

अलीगढ़ में राही के भीतर साम्यवादी दृष्टिकोण का विकास हुआ और वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भी बन गये। अपने साम्यवादी सिद्धान्तों के द्वारा वे समाज के पिछड़ेपन को दूर करना चाहते थे और इसके लिए वे सक्रिय प्रयत्न भी करते थे। परिस्थितिवश उन्हें अध्यापन कार्य छोड़ना पड़ा और वे रोज़ी-रोटी की तलाश में मुंबई पहुँच गये।

दूरदर्शन और फ़िल्में

सन १९६८ से राही बम्बई रहने लगे थे। वह अपनी साहित्यिक गतिविधियों के साथ-साथ फ़िल्मों के लिए भी लिखते थे। राही स्पष्टतावादी व्यक्ति थे। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण वह अत्यन्त लोकप्रिय हो गए थे। मुम्बई रहकर उन्होंने ३०० फ़िल्मों की पटकथा और संवाद लिखे तथा दूरदर्शन के लिए १०० से अधिक धारावाहिक लिखे, जिनमें 'महाभारत' और 'नीम का पेड़' अविस्मरणीय हैं।

रचनाएँ

राही का कृतित्त्व विविधताओं से भरा रहा है। इन्होंने आठ उपन्यास लिखे। आधा गाँव (१९६६) में गाजीपुर जिले के गंगोली गाँव के आधे भाग में रहने वाले सैयद मुसलमानों की कहानी है। यह कहानी देश के स्वतंत्र होने, उसके दो टुकड़ों में बँटने, जमींदारी के समाप्त होने और नये ज़माने में राजनेताओं के रूप में अलग समृद्ध और शक्तिशाली वर्ग के उदय होने की है। लेखक ने बताया है कि समय के गुजरने के साथ साम्प्रदायिक तत्व उभरते हैं और कुछ शिक्षित मुसलमानों के निजी स्वार्थ की वजह से देश का विभाजन होता है, दंगे होते हैं, नफ़रत पैदा होती है। इसके अलावा राही के 'टोपी शुक्ला' (१९६९), 'हिम्मत जौनपुरी' (१९६९), 'ओस की बूँद' (१९७०), 'दिल एक सादा काग़ज़' (१९७३), 'सीन ७५' (१९७७), 'कटरा बी आरजू' (१९७८), 'असंतोष के दिन' (१९८५) आदि मशहूर उपन्यास हैं । "टोपी शुक्ला" में राजनैतिक समस्या पर विचार किया गया है। राही इस उपन्यास के द्वारा यह बतलाते हैं कि सन् १९४७ में भारत-पाकिस्तान के विभाजन का ऐसा कुप्रभाव पड़ा कि अब हिन्दुओं और मुसलमानों को मिलकर रहना अत्यन्त कठिन हो गया। 'ओस की बूँद' का आधार भी वही हिन्दू-मुस्लिम समस्या है। इस उपन्यास में पाकिस्तान के बनने के बाद जो सांप्रदायिक दंगे हुए उन्हीं का जीता-जागता चित्रण एक मुसलमान परिवार की कथा द्वारा प्रस्तुत किया गया है। "दिल एक सादा काग़ज़" के रचना-काल तक सांप्रदायिक दंगे कम हो चुके थे। पाकिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया गया था और भारत के हिन्दू तथा मुसलमान शान्तिपूर्वक जीवन बिताने लगे थे। इसलिए राही ने अपने उपन्यास का आधार बदल दिया। अब वे राजनैतिक समस्या प्रधान उपन्यासों को छोड़कर खासकर सामाजिक विषयों की ओर उन्मुख हुए। इस उपन्यास में राही ने फिल्मी कहानीकारों के जीवन की गतिविधियों, आशा-निराशाओं एवं सफलता-असफलता का वास्तविक एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। "सीन ७५" का विषय भी फिल्मी दुनिया से लिया गया है। इस सामाजिक उपन्यास में बम्बई महानगर के उस बहुरंगी जीवन को विविध कोणों से देखने और उभारने का प्रयत्न किया गया है जिसका एक प्रमुख अंग फिल्मी जीवन भी है। विशेषकर इस उपन्यास में फिल्मी जगत से सम्बद्ध व्यक्तियों के जीवन की असफलताओं एवं उनके दुखमय अन्त का सजीव चित्रण किया गया है। 'कटरा बी आरजू' का आधार फिर से राजनैतिक समस्या हो गया है। इस उपन्यास में लेखक ने इमरजेंसी के दौरान सरकारी अधिकारियों द्वारा जनता को परेशान करने की कहानी है।